Vol 6 Issue 1 July 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
RNI : MAHMUL/2011/38887
ISSN No: 2231-5063
Impact Factor 2.2052 (UIF) [Yr. 2014]
3.4052 (UIF) [Yr. 2015]
4.6052 (UIF) [Yr. 2016]

GRT Golden Research Thoughts

नारी से अभिव्यकित सर्वोत्तम सौंदर्य एवं चेतना

डॉ. ओघड लखमनभाई झाला
एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.

प्रस्तावना–

हिन्दू समाज आदर्श रुप में पत्नी को अर्धांगिनी, गृहस्वामिनी एवं सम्माननीय मानता है, किन्तु व्यावहारिक रुप में, परिवार में उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। नारी मानवी न रहकर केवल उपभोग्य–सामग्री मात्र थी, उसका कोई अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं था। नारी केवल पुरुष के हाथों की कठपुतली मात्र थी। पुत्री का जन्म दु:ख तथा अभाग्य का प्रतीक समझा जाता था। समाज की महत्वपूर्ण इकाई है – परिवार। वह व्यकित के व्यकितत्व और सामाजिक संबंधो का मूलाधार है, क्योंकि व्यकित जन्म से लेकर मृत्यु–पर्यन्त विभिन्न रुपों में समाज से जुड़ा रहता है। इस प्रकार सामाजिक ढाँचे का प्रमुख आधार परिवार ही है और परिवारों में गहरी जड़े जमाये रुढियाँ एवं प्रथाओं का नारी सबंधों में चित्रण किया है।नारी समस्त मानवीय सौंदर्य एवं चेतना की सर्वोत्तम अभिव्यकित है, साथ ही सृष्टि का मूल भी। संस्कृत साहित्य में भी नारी की गौरवगाथा का वर्णन किया गया है।

यत्र नार्यस्तू पूजयन्ते रमन्तें तत्र देवता।
यत्र नार्यस्तू न पूजयन्ते सर्वत्र क्रिया विफला।।

हमारे धर्मशास्त्रों में नारी को देवी माना गया है, जहाँ पर नारी का आदर सत्कार किया जाता है वहाँ पर देवताओं का निवास रहता है, और जहाँ नारीयों का आदर–सत्कार न किया जाए वहाँ पर सारे काम विफल हो जाते है।

माँ और सन्तान :

कहा जाता है कि भगवान हर जगह नही पहुँच पाता इसके लिए उसने माँ का सर्जन किया। जीवन में माँ का सबंध मधुर और अटूट होता है। वह बच्चों का लालन–पालन, खान–पान, शिक्षा, दीक्षा, वर्तमान और भविष्य के निर्माण की चिन्ता करती है। बच्चों के विवाह की चिन्ता सबसे अधिक माँ को रहती है। माँ का अपनी सन्तान से न केवल रक्त–संबंध होता है, वरन् वह उसे अतिशय, स्नेह भी देती है। वह स्वयं दु:ख सहकर सन्तान को सुख पहुँचाने की सतत चेष्टा करती है।

हमारा समाज माँ की ममता से अपरिचित नहीं कि सन्तान, के लिए हिन्दु नारी क्या नहीं कर सकती। तेजरानी पाठक का 'बदला' कहानी में महाराणा प्रताप का वंशज वीर प्रताप माँ के अपमान के बदले के सम्मुख प्रेम का त्याग कर कर्तव्य को चुनता है 'माँ' क्या कहती हो ? यदि मेरे रहते तुम्हे अपने अपमान का बदला अपने आप लेना पड़े, तो मेरे जीवन को धिक्कार है। मेरे होते हुए तुम्हें अपने अपमान का बदला लेने के लिए किसी और को ढुँढना नहीं पड़ेगा। तुम्हारे अपमान के आगे प्रेम क्या, मेरे प्राण भी कुछ नहीं है। क्षत्रियों के लिए मान से बढ़कर संसार में कुछ नहीं होता। इसमें वर्णित माँ – बेटे के अन्याय के विरुद्ध लड़ने का निश्चय और दृढ़ संकल्प है।

माँ मुझे अपने आँचल में छुपा ले,
गलेसे लगा ले के और मेरा कोई नहीं......

भाई – बहन :

एक ही माँ की सन्तान होने के कारण भाई–बहन के मन में सहज स्नेह का भाव रहता है। भारतीय परिवार में बहन और, भाई का प्रेम सात्विक प्रेम है जो वासना से कोसो दूर है। पिता के अभाव में भाई अपनी बहन का भरण–पोषण ही नहीं करता, बल्कि इसके लिए योग्य पति की खोज करके सुखी दाम्पत्य जीवन की मंगलकामना भी करता है।

भाई – बहन का प्रेम सबसे पवित्र माना गया है। बहन भाई को चाहे कितना ही सताये, किन्तु अपने भाई के अनिष्ट की आशंका मात्र ही उसके मन को विचलित बना देती है। पवित्र प्रेम–सूत्र में बँधे भाई–बहन का चित्र – 'भाई–बहन' (सत्यवती मल्लिक की कहानी) में मिलता है। निर्मला का छोटा भाई कमल जुलूस देखने चला जाता है। निरंतर लड़ाई झगड़े के बावजूद भी कमल के खो जाने पर निर्मला अत्यंन्त व्याकुल हो उठती है। उसकी आँखो से निरन्तर आँसू बहते रहते है। अचानक भाई के मिल जाने पर वह भाव विहवल हो उसे सीने से लगा लेती है, कमल को दृढ पाश में बाँधे निर्मला दुगुने वेग से रो रही है। उसके कोमल गुलाबी गाल मोटे–मोटे आँसुओं से भीगे जा रहे है, और वह बार–बार कमल का मुख चूम रही है – ''पगले ! तू कहाँ चला गया था ? गधे! क्यो चला गया था'' ।(1)

इस प्रकार 'भाई बहन' के प्रेमसूत्र को लेखिका ने रेखांकित किया है।

पति–पत्नी :

नारी और पुरुष दोनो एक दूसरे के पूरक है। नारी के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नही और पुरुष के अभाव में नारी का कोई मूल्य नहीं। इसलिए नारी को पुरुष की अर्धांगिनी माना गया है। दोनो का सबंध अनादि, अखण्ड और अभिन्न है। स्त्री और पुरुष मिलकर जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई बनते है। 'दाम्पत्य' शब्द इसकी पुष्टि करता है। (2)

पति को परमेश्वर माननेवाली नारी अपनी संपूर्ण सेवा, त्याग, सहानुभूति पति पर ही केन्द्रित रखती है। अतः पति–पत्नी संबंध ही पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। प्रतापनारायण श्रीवास्तव द्वारा लिखित 'विदा' में चपला कहती है – ''स्त्री पुरुष दोनो एक होकर रहे, दोनो में मतभेद न होने पावें। स्त्री को यह गर्व न हों की मैं स्वामी से बड़ी हूँ, और, स्वामी को अभिमान न हो कि सब बुद्धि ईश्वर ने मेरे ही हिस्से में रखी है। स्त्री घर की, मालकिन है तो पुरुष बाहर का। दोनो उस पवित्र–प्रेम सूत्र में बंधे हो, जहाँ न राग है, न अभिमान, न द्वेष है और न कलह। असीम शान्ति है, अनन्त प्रेम है।''(3)

अतः परिवार को बनाने या बिगाड़ने में पति–पत्नी के सबंध विशेष महत्व रखते है। इस प्रकार नारी अपना सारा जीवन बिना किसी स्वार्थ के अपने परिवार की देखभाल करने मे लगा देती है, और एक बेटी, बहन और पत्नी बनकर अपने जीवन के सारे कर्तव्य बखूबी निभाती है।

संदर्भ :

1. सत्यवती मल्लिक दो फूल पृ. 38
2. आशारानी वोहरा नारी शोषण : आईने और आयाम पृ. 221
3. प्रतापनारायण श्रीवास्तव – विदा, पृ. 183

डॉ. ओघड लखमनभाई झाला
एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org